International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-04-2025, Accepted: 21-05-2025, Published: 05-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 51-52

किसान जीवन पर केंद्रित कथा साहित्य

डॉ. भयामता साहू[1], जय सिंह कुर्रे[2]
[1] प्रध्यापक, हिंदी विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विद्यालय, कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ, भारत
[2] शोधार्थी, हिंदी विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
हिन्दी कथा साहित्य में किसान जीवन एक महत्वपूर्ण विशय के रूप में उभरा है। कृशि प्रधान देश होने के बावजूद भारत मे किसानों की स्थिति संघर्शपूर्ण बनी हुई है। आर्थिक उदारीकरण, जलवायु परिवर्तन, भुमंडलीकरण और तकनीकी विकास के कारण किसान जीवन मे बडें बदलाव आए हैं। हिन्दी साहित्यकारो ने इन परिवर्तनो और चुनौतियों को अपने कथा–साहित्य मे संवेदनशीलता और गहराई के साथ चित्रित किया है। कथा साहित्य के माध्यम से ही किसान जीवन के संघर्शो तथा उनकी समस्याओ उनकी मनोवैज्ञानिक स्थितियो और बदलते सामाजिक परिदृश्यो को प्रमुखता से ही उकेरा है।

मूल शब्दः भुमण्ड़लीकरण, उदारीकरण, संवेदनशीलता, संघर्शपूर्ण, चुनौतिया, मनोवैज्ञानिक

1. **अकाल संध्याः** 'अकाल संध्या' उपन्यास रामधारी सिंह दिवाकर द्वारा लिखित एक किसान केन्द्रित उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से दिवाकर जी अकाल संध्या के ग्रामीण जीवन की बदलाव की प्रकिया से गुजर रहे गॉवो का प्रामाणिक दस्तावेज को प्रस्तुत किया है। ध्वस्त होती सामन्ती ग्रामीण व्यवस्था के जो नयी समाज व्यवस्था उभर रही है। उसके उसके शुभ अशुभ पक्षो को कथाकर ने पूरी तन्मयता से उकेरा है। स्थापित मान–मूल्य टुट रहे है उसमे सामाजिक मूल्यों की वापसी के चिन्ताजनक संकेत परेशान करने वाले है। जन तांत्रिक से दीप्त और बदलाव के लिए बेचौन गॉव के इस नये मानस के अंर्तविरोधो को कथाकर ने गहरी मानवीय संवेदनाओं से चित्रित किया हैं। उपन्यास मे दलित व्यथा का भी अद्भूत पक्षो को खुलकर सामने लाने का प्रयास किया गया है। जिससे हम अक्सर आँखे चुराते है। गॉव के सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन से लेखक की गहरी आत्मीयता सरोकार और संलग्नता का प्रमाण है, यह उपन्यास। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कथा–प्रवाह और रोचकता स्मृति पर अमिट छाप छोड़ जाते है। गॉव की घनी अबादीयाँ टेढे–मेढे रास्तो को भलि–भाँति अपने कथा मे उकेरा गया हे।
   दिवाकार जी गॉव के बोली बानी से अच्छे से परिचित होकर समकालिन संवाहक और नये युग का संकेतन है 'अकाल संध्या' उपन्यास
   'अकाल संध्या' उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र है, माई जो अपने गॉव और समाज का पूरा व्यक्तित्व समेटे हुए है। माई का बेटा नन्दू पढ़ लिखकर अमेरिका चला जाता है। और कुछ दिनो बाद वह अपने पूरे परिवार को भी ले जाता है। अकेली रह जाती है, तो सिर्फ माई। यह कथा आज के पढे लिखे भारतीय समाज का चित्र को प्रदर्शित करती है। पढे लिखे ''प्रतिभावान'' लोग अपने देश को छोडकर विदेश चाले जाते है''[1] और कम पढे लिखे तथा अनपढ़ लोग देश के राजनीति में भाग लेते है। उपन्यास के माध्यम से लेखक पूरे भारत देश के राजनीतिक ढ़ाचे को सशक्त उजागर किया है।

2. **अकाल मे उत्सवः** 2016 मे प्रकाशित 'अकाल मे उत्सव' उपन्यास पंकज सुधीर जी द्वारा लिखित एक किसान विमर्श उपन्यास है। इस उपन्यास मे सरकारी तंत्र का किसानो के प्रति उनकी सोच और मानसिकता को प्रदर्शित करती हुई चित्रण है। हमारे मौजूदा समय यह उपन्यास को प्रदर्शित करती है कि हम किस गंभीर समस्या का सामना कर रहे है। भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता हैं। यहॉ जय जवान जय किसान का नारा को बुलंद किया जाता है। वही ही आज खुद उसी किसान की आवाज घुट रही है। बाजार उद्योग के चका चौंध मे खेती उपेक्षा का शिकार और किसान आत्महत्या का शिकार होते जा रहा है। घाटे की इस सौदा में खेती तथा इतनी मेहनत के बाद भी किसान के तन परुटे कपड़े और चेहरे पर झुरिया देखकर खुद किसान की आने वाली पीढ़ी किसानी को अपनाना नही चाहता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक बताने का प्रयास कर रहा है, कि ''किसान आपदा का मारा हुआ नही है। बल्कि व्यवस्थाओ का मारा हुआ है''[2] 'अकाल मे उत्सव' नाम की व्यंजना से ही उपन्यास के कथा का पता चलता है। एक तरफ जश्न और आंनद है तो एक तरफ मरण। यह उपन्यास व्यवस्था के दो ध्रुव की कथा है। एक ओर जन हे तो दुसरी ओर तंत्र है। जिसमे तंत्र के प्रतिनिधि कलेक्टर श्रीमान परिहार है। तो जन के प्रतिनिधि किसान राम प्रसाद हैं। यह उपन्यास प्रशासन और किसान के वृहद परिपेक्ष्य को रचता है।

3. **जमीनः** ''जमीन'' उपन्यास भीमसेन त्यागी द्वारा लिखित उपन्यास है। जिसमे गॉवो के जीवन मे तेजी से आये बदलाव का चित्रण है। समय की आंधी मे गॉव का बाहर ही नही अन्दर भी बदलता जा रहा है। सामन्ती वैमनस्य लोक तान्त्रिक सत्ता संघर्ष मे परिवर्तित हो रहा है। निर्धन किसान भूमिहीन हो रहा है, और भूमिहीन की यातनाएँ बढ़ रही है। स्वराज्य ने सुराज का जो सपना दिखाया था वह तुकड़ा–तुकड़ा हो गया है।
   लेखक ने जो देखा और महसूस किया अपने गांव के संदर्भ में उसे इस उपन्यास के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास में स्वाधीनता के पश्चात नेहरू युग तक के विकास क्रम के स्वप्न काल की कथा है। ''गंगा यमुना के बीच का यह गांव ग्रामीण भारत का प्रतिनिधि है। समुचे ग्राम में जीवन की आत्मा गणेशपुर में धड़कती है''[3] इसी गणेशपुर नामक गांव की कहानी इस उपन्यास में वर्णित है। जिसमें गांव के भाषा बोली तथा किसान जीवन को रोचकता पूर्वक लिखा गया है।

4. **सल्तनत की सुनो गांव वालोंः** यह उपन्यास जयनंदन द्वारा लिखित है। यह उपन्यास ''एक बुकी पोरा परिवार की लड़की और एक हलजोतवा काश्तकार के बेटी की मुहब्बत''[4] की कहानी है। जिससे बयालीस साल पहले बनी एक नहर जो गांव में हरित क्रांति लाई थी, धीरे–धीरे ध्वस्त होती चली जा रही थी। लेकिन उसमें सुधार करवाने का कोई नाम ही नही लिया जा रहा था। प्यार करने वाली लड़की ने नहर दुरूस्त करवाने के लिए अमरण अनसन करती है। इस उपन्यास में सभी के हितों के लिए अपने बुर्के के त्याग करके लोक हित को सर्वोपरी मानने वाली साहसी लड़की का उल्लेख है। लड़की के इस पहल से पूरे गांव में हर्सोल्लास के साथ सभी को आश्र्चय भी हो रहा है। लड़की के मरणासन्न स्थिति पर पहुंच जाने पर भी प्रशासन या सरकार के किसी भी कर्मचारी को कोईुक्र नहीं हुई। लड़के ने कहा ''अनशन तोड़ दो, सल्तनत। यह अंग्रेजो का राज नहीं है। जब गांधी जी के उपवास और असहयोग अवज्ञा आंदलनों को भी नोटिस कर ली जाती थी।''[5] लड़के का यह कथन हमारे समाज तथा शासन तंत्र के लिए चुनौति भरा सवाल था। शासन के प्रति कटाक्ष था कि आम जनता चाहे जिये मरे। किसी को कोईुक्र नहीं पड़ने वाला। इस उपन्यास में कई कथा से समाहित कथ्य है जिसमें ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर रचा गया हैं।

5. **हलफनामेंः** राजू शर्मा द्वारा लिखित यह उपन्यास समकालिन हिन्दी उपन्यास लेखन की विशिष्ट उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है। प्रस्तुत उपन्यास में एक मुख्यमंत्री किसानों के मत (वोट) बटोरने के इरादे से किसान आत्महत्या योजना से मुआवजा हासिल करने के लिए हलफनामा दाखिल करता है। उपन्यास के माध्यम से लेखक भारतीय समाज का असाधारण आरख्यान रचा है। यहां एक तरफ शासन तंत्र की निर्दयता और उसकुेरेब का वृतांत है तो दूसरी तरफ सामान्य जन के सुख–दुख संघर्ष की अनूठी छवियां है। हलफनामें में भारत के ग्रामीण विकास की वैकल्पिक अवधारणा का अद्भूत सज्रनात्मक पाठ है।

निष्कर्ष

हिन्दी कथा साहित्य में किसान जीवन केवल एक सामाजिक विषय नहीं है। बल्कि यह राजनीतिक चेतना, आर्थिक बदलाव और सांस्कृतिक रूपांतरण का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। किसानों की समस्याओं को आधुनिक संदर्भी में जोड़कर जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक, कार्पोरेट खेती और डिजिटल क्रांति जैसे विषय शामिल कर किसानों की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है। शासन प्रेस को भी विशेष ध्यान देकर किसानों को आगे जाने तथा प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए। जिससे किसानों की आगे की इस ओर आपकी रूचि प्रदर्शित कर सके।

संदर्भ सूचि

1. अकाल संध्या, समध्यायी सिंह दिवाकर, ज्ञानपीठ प्रकाशन 2006।
2. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन 2016।
3. 'जमीन' भीमसेन त्यागी, भारतीय ज्ञानपीठ 2014।
4. 'सल्तनत' की सुनो गांव वालों' जयनंदन वाणी प्रकाशन 2014।
5. सल्तनत की सुनो गांव वालों जयनंदन वाणी प्रकाशन 2014।